(४) ओंकारमयी वाणी तेरी...

ॐकारमयी वाणी तेरी जिनधर्म की शान है;
समवसरण देख के शान्त छवि देख के गणधर भी हैरान है॥ टेक॥

स्वर्ण कमल पर, आसन है तेरा सौ इन्द्र कर रहे गुणगान है;
दृष्टि है तेरी, नाशा के ऊपर, सर्वज्ञता ही तेरी शान है।
चाँद सितारों में, लाख हजारों में तेरी यहाँ कोई मिशाल नहीं है;
चार मुख दिखते, समवसरण में, स्वर्ग में भी ऐसा कमाल नहीं है।
हमको भी मुक्ति मिले बस इतना ही अरमान है॥ 1॥

सारे जहाँ में फैली ये वाणी गणधर ने गूँथी इसे शास्त्र में;
सच्ची विनय से श्रद्धा करे तो ले जाती है मुक्ति के मार्ग में।
कषायें मिटाये, राग को नशाये, इसके श्रवण से ये शान्ति मिलती है;
सुख का ये सागर, आत्म में रमणकर, आतम की बगिया में मुक्ति खिली है।
हम सब भी तुमसा बनें – ऐसा ये वरदान है॥ 2॥

मैं हूँ त्रिकाली, ज्ञान स्वभावी, दिव्यध्वनि का यही सार है;
शक्ति अनन्त का, पिण्ड अखण्ड, पर्याय का भी ये आधार है।
ज्ञेय झलकते हैं, ज्ञान की कला में, कैसा ये अद्भूत कलाकार है;
सृष्टि को पीता, फिर भी अछूता, तुझमें ही ऐसा चमत्कार है।
जग में है महिमा तेरी गूँज रहा नाम है॥ 3॥